– Save This Page as a PDF–

उसी दिन उस ने उन से दृष्टान्तों में बातें कीं

खोदाई: दृष्टांत क्या है? क्या दृष्टान्त का विवरण दबाया जा सकता है? यीशु दृष्टान्तों में क्यों बोलने लगे? क्या यह क्रूर था या बस? मनमाना या योग्य? मसीहा द्वारा दृष्टांतों में बात करने के चार कारण क्या थे? परमेश्वर के राज्य के पाँच पहलू क्या हैं? दृष्टांत के चार प्रकार कौन से हैं?

मत्ती १२ और मत्ती १३ के बीच के संबंध को समझना वास्तव में महत्वपूर्ण है। मत्ती १२ में मसीहा की राष्ट्रीय अस्वीकृति के कारण ही यीशु ने मत्ती १३:१ में दृष्टांतों में शिक्षा देना शुरू किया। उन्होंने उसी दिन दृष्टान्तों में बोलना शुरू किया जिस दिन महासभा ने उन्हें मसीहा के रूप में अस्वीकार कर दिया था। येशुआ ने कहा कि वह इसराइल को यह विश्वास दिलाने के लिए कोई और सार्वजनिक चमत्कार नहीं करेगा कि वह ईश्वर का पुत्र है। ईसा मसीह ने कहा कि उनका अगला चिन्ह योना का चिन्ह होगा (Eo – भविष्यवक्ता योना का चिन्ह)।

मत्ती १३:१०-१८ में हम उन दृष्टांतों का उद्देश्य सीखते हैं। प्रेरितों ने उसके पास आकर पूछा: तू लोगों से दृष्टान्तों में क्यों बातें करता है (मत्ती १३:१०)? यह मसीहा के मंत्रालय में परिवर्तन की शुरुआत थी (देखें En – मसीह के मंत्रालय में चार कठोर परिवर्तन)। इससे पहले, जब भी उन्होंने जनता से बात की, तो स्पष्ट रूप से बात की। इसका एक अच्छा उदाहरण मत्ती ५-७ में पहाड़ी उपदेश है। मत्ती हमें बताता है कि लोगों ने न केवल यह समझा कि उसने क्या कहा था, बल्कि उन्होंने उसकी शिक्षा और फरीसियों और टोरा-शिक्षकों की शिक्षा के बीच के अंतर को भी समझा। हालाँकि, उनकी अस्वीकृति के बाद, यीशु ने यहूदी जनता को दृष्टान्तों में पढ़ाना शुरू किया। इससे बारहों को आश्चर्य हुआ क्योंकि वे जानते थे कि, उस बिंदु तक, कि यीशु उन्हें स्पष्ट रूप से सिखा रहे थे। इसलिए, तल्मिडिम जानना चाहते थे कि मसीह ने उनसे दृष्टांतों में बात करना क्यों शुरू किया था।

यीशु ने उत्तर दिया: स्वर्ग के राज्य के रहस्यों (ग्रीक: मिस्टीरिया) का ज्ञान तुम्हें दिया गया है, लेकिन उन्हें नहीं। जिसके पास है, उसे और दिया जाएगा, और उसके पास बहुतायत होगी। जिसके पास नहीं है, उससे वह भी ले लिया जाएगा जो उसके पास है। इसी कारण मैं उन से दृष्टान्तों में बातें करता हूं, कि वे देखते हुए भी नहीं देखते; वे सुनते हुए भी न सुनते और न समझते हैं (मत्ती १३:११-१३)। जो भी शब्द है वह विश्वासियों को संदर्भित करता है। ये राज्य के सच्चे नागरिक हैं जिन्होंने राजा का स्वागत किया है। और जो कोई परमेश्वर से उद्धार ग्रहण करेगा, उसे और भी दिया जाएगा, और उनके पास बहुतायत होगी। लेकिन अविश्वासियों का भाग्य

Er – उसी दिन उस ने उन से दृष्टान्तों में बातें कीं | 2

बिल्कुल विपरीत होगा। उनके अविश्वास के कारण, उन्हें मुक्ति नहीं मिलेगी, और यहाँ तक कि परमेश्वर की सच्चाई का प्रकाश भी उनसे छीन लिया जाएगा। उन्होंने राजाओं के राजा को ना कहा, और क्योंकि उन्होंने अपने ऊपर चमकने वाले दिव्य प्रकाश को अस्वीकार कर दिया, वे आध्यात्मिक अंधकार में और भी गहरे डूबते चले जायेंगे।



यीशु द्वारा दृष्टान्तों में शिक्षा देने के
चार कारण थे। सबसे पहले, दृष्टांत विश्वास करने वालों को सच्चाई का वर्णन करेंगे। जब यीशु ने दृष्टान्तों में शिक्षा देनी आरम्भ की, तो उसने कहा: जिसके सुनने के कान हों वह सुन ले (मत्ती १३:९; मरकुस ४:९; लूका ८:८बी)। दूसरे शब्दों में, “जिसके पास आध्यात्मिक कान हों, वह आध्यात्मिक सत्य सुनें।” दृष्टान्तों ने आध्यात्मिक सत्य सिखाया। जो कोई परमेश्वर का है वह सुनता है कि परमेश्वर क्या कहता है (यूहन्ना ८:४७ए)। दूसरे, दृष्टांत उस जनसमूह से सच्चाई छिपा देंगे जिन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया था। चूँकि राष्ट्र ने प्रकाश को अस्वीकार कर दिया था, इसलिए कोई और प्रकाश नहीं दिया जाएगा। उन्हें उन शब्दों में स्पष्ट रूप से सिखाने के बजाय जिन्हें वे पहले की तरह आसानी से समझ सकते थे, फिर उन्होंने उन्हें दृष्टान्तों में सिखाया जिन्हें वे समझ नहीं सकते थे। तीसरा, दृष्टांतों ने भविष्यवक्ताओं के शब्दों को पूरा किया। यीशु ने यशायाह ६:९-१० को उद्धृत किया जिसमें भविष्यवाणी की गई थी कि मसीहा धर्मत्यागी यहूदी लोगों से इस तरह बात करेगा कि वे समझ ही नहीं पाएंगे। चौथा, दृष्टान्तों ने परमेश्वर के राज्य, या परमेश्वर के शासन के रहस्यों को समझाया।

यीशु ने ये सब बातें दृष्टान्तों में भीड़ से कहीं; उसने दृष्टान्त का प्रयोग किये बिना उनसे कुछ नहीं कहा। इस प्रकार जो वचन भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हुआ, “मैं दृष्टान्तों में अपना मुंह खोलूंगा, और जगत की उत्पत्ति से जो बातें छिपी थीं, उन्हें प्रगट करूंगा” (मत्ती १३:३४-३५)। ये छंद इस बात पर फिर से जोर देते हैं कि यीशु ने अपनी अस्वीकृति के बाद जनता से बात करने के तरीके को बदल दिया। यह दृष्टांतों के दूसरे उद्देश्य को दोहराता है और वह था अविश्वासी जनता से सच्चाई को छिपाना। मत्तित्याहू फिर से बताते हैं कि भविष्यवक्ताओं ने उनके बारे में बात की थी। इसने दृष्टान्तों के तीसरे उद्देश्य को पुनः स्थापित किया। इस बार भजन ७८:२ उद्धृत किया गया है। भविष्यवक्ताओं के शब्दों को पूरा करके, गलील के रब्बी ने साबित कर दिया कि वह वास्तव में वह मसीहा

Er – उसी दिन उस ने उन से दृष्टान्तों में बातें कीं | 3

था जिसे अस्वीकार कर दिया गया था।

इसका समानांतर विवरण मरकुस ४:३३-३४ में पाया जाता है जहां एक ही बात कही गई है: कई समान दृष्टांतों के साथ यीशु ने उनसे शब्द कहा, जितना वे समझ सकते थे। उसने दृष्टान्त का प्रयोग किये बिना उनसे कुछ नहीं कहा। परन्तु जब वह अपने शिष्यों के साथ अकेला था, तो उसने उन्हें सब कुछ समझाया। यहां मार्क कहते हैं कि जब यीशु अपने प्रेरितों के साथ अकेले थे तो उन्होंने इन विशेष दृष्टांतों में से प्रत्येक का अर्थ समझाया क्योंकि जब तक उन्होंने उन्हें समझाया नहीं – दृष्टांत उनके लिए एक रहस्य थे। इसने दृष्टांतों के पहले उद्देश्य को दोहराया कि वे विश्वास करने वालों को सच्चाई का वर्णन करेंगे। महासभा द्वारा ईसा मसीह की अस्वीकृति के बाद से, उन्होंने लगातार इसी पद्धति का उपयोग किया। हालाँकि, जब भी यीशु जनता से बात करते थे तो वह दृष्टान्तों में बात करते थे।

दृष्टान्तों का उद्देश्य परमेश्वर के राज्य, या परमेश्वर के शासन का वर्णन करना था और है। मत्ती वाक्यांश का उपयोग करता है: स्वर्ग का राज्य, जबकि मार्क और ल्यूक वाक्यांश का उपयोग करते हैं: परमेश्वर का राज्य। दोनों वाक्यांश पर्यायवाची हैं। मत्ती स्वर्ग के राज्य का उपयोग करता है क्योंकि वह यहूदी दर्शकों से बात कर रहा था जो परमेश्वर के नाम का उपयोग करने से बचते थे। आज भी, कई यहूदी ईश्वर शब्द के स्थान पर यहोवा, या प्रभु का प्रयोग करते हैं। रूढ़िवादी यहूदी हाशेम के कम व्यक्तिगत नाम का उपयोग करते हुए और भी आगे बढ़ते हैं, जिसका अर्थ है नाम। कुछ यहूदियों के लिए नाम के प्रति उनकी श्रद्धा इतनी गहरी है कि वे पूरे शब्द का उच्चारण करने से इनकार कर देते हैं, बल्कि इसके बजाय इसे G-d या L-rd लिखते हैं। परमेश्वर के राज्य के पाँच पहलू हैं।

ईश्वर के राज्य का पहला पहलू यह है कि यह एक शाश्वत साम्राज्य है जो अपनी रचना पर ईश्वर के संप्रभु शासन का वर्णन करता है। यहोवा सदैव नियंत्रण में हैं, और उनकी इच्छा के बाहर कुछ भी नहीं होता है। जो कुछ भी घटित होता है, घटित होता है क्योंकि वह या तो इसका आदेश देता है या इसकी अनुमति देता है। उसका राज्य कालातीत है क्योंकि ईश्वर कभी नियंत्रण से बाहर नहीं होता। यह सार्वभौमिक भी है. इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि चीजें कहां मौजूद हैं, सब कुछ परमेश्वर की संप्रभु इच्छा और नियंत्रण के भीतर है (भजन १०:१६, २९:१०, ७४:१२, ९०:१-६, ८३:११-१५, १०३:१९-२२, १४५:१०-१३; नीतिवचन २१:११; यिर्मयाह १०:१८; विलापगीत ५:१९; दानिय्येल ४:१७, २५ और ३२, दानिय्येल ६:२७; प्रेरितों १७:२४; प्रथम इतिहास २९:११-१२)।

परमेश्वर के राज्य का दूसरा पहलू यह है कि यह एक आध्यात्मिक राज्य है। पोंटियस पीलातुस से पहले, यीशु ने कहा था: मेरा राज्य इस दुनिया का नहीं है। यदि ऐसा होता, तो मेरे सेवक यहूदियों द्वारा मेरी गिरफ्तारी को रोकने के लिए लड़ते। लेकिन अब मेरा राज्य प्रशंसा का दूसरा रूप है। तो फिर आप एक राजा हैं! पिलातुस ने कहा। यीशु ने उत्तर दिया: तुम ठीक कह रहे हो कि मैं राजा हूं। वास्तव में, इसी

Er – उसी दिन उस ने उन से दृष्टान्तों में बातें कीं | 4

कारण से मेरा जन्म हुआ, और इसी लिये मैं सत्य की गवाही देने के लिये जगत में आया हूं। सत्य का पक्ष रखने वाला हर कोई मेरी बात सुनता है (यूहन्ना १८:३६-३७)। यह आध्यात्मिक साम्राज्य उन सभी विश्वासियों से बना है जिन्होंने रुआच हाकोडेश द्वारा एक नए जन्म का अनुभव किया है। इसलिए, प्रत्येक व्यक्ति जो पवित्र आत्मा के पुनर्जन्म के माध्यम से विश्वास द्वारा फिर से पैदा हुआ है वह आध्यात्मिक साम्राज्य का सदस्य है। सच्चा सार्वभौमिक चर्च और आध्यात्मिक साम्राज्य एक ही हैं। यह मत्तित्याहू का राज्य ६:३३ है, जहां यीशु कहते हैं: पहले उसके राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो, और ये सभी चीजें तुम्हें भी दी जाएंगी। यह यूहन्ना ३:३-७ में भी परमेश्वर का राज्य है, जिसके बारे में यीशु निकुदेमुस से बात कर रहे थे जब उसने कहा: कोई भी तब तक परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता जब तक कि वह दोबारा जन्म न ले (मत्ती १९:१६, २३-२४, जॉन) ८:१२; अधिनियम ८:१२, १४:२२, १९:८, २०:२५, २८:२३; गलातियों ५:२१; इफिसियों ५:५; कुलुस्सियों १:१३, ४:११; प्रथम थिस्सलुनीकियों २:१२; दूसरा थिस्सलुनीकियों १:५; पहला कुरिन्थियों ६:९-१०, ४:२०)।

परमेश्वर के राज्य का तीसरा पहलू एक ईश्वरीय राज्य था। इसका मतलब है एक राष्ट्र पर ईश्वर का शासन: इज़राइल। मूसा ने इसकी स्थापना की और टोरा ने इसके संविधान के रूप में कार्य किया। मानव इतिहास में ईश्वरीय साम्राज्य को दो चरणों में देखा जा सकता है। सबसे पहले, परमेश्वर ने मूसा, यहोशू और न्यायाधीशों के मध्यस्थों, दूसरे शमूएल के माध्यम से शासन किया। दूसरा, परमेश्वर ने राजाओं के माध्यम से शासन किया, इस्राएल के पहले राजा शाऊल से लेकर इस्राएल के अंतिम राजा सिदकिय्याह तक। ५८६ ईसा पूर्व में यरूशलेम के बेबीलोनियाई विनाश के साथ, ईश्वरीय साम्राज्य समाप्त हो गया (उत्पत्ति २० से दूसरे इतिहास ३६ तक), और अन्यजातियों का समय शुरू हुआ (मेरी टिप्पणी देखें प्रकाशित वाक्य An– अन्यजातियों का समय)।

परमेश्वर के राज्य के चौथे पहलू को दो नाम दिए गए हैं: मसीहाई साम्राज्य या सहस्राब्दी साम्राज्य। मसीहा साम्राज्य सबसे आम यहूदी नाम है क्योंकि यह इस बात पर जोर देता है कि शासक कौन होगा। यह तानाख में भविष्यवाणी का एक प्रमुख क्षेत्र था (भजन २:६-१२, ७२:१-१७; यशायाह ९:६-७, ११:१-१६; यिर्मयाह २३:५-६, ३२:१४-१७; यहेजकेल ३४:२३, ३७:२४; होशे ३:४-५; मीका ४:६-८, ५:२; मलाकी ३:१-४)। सहस्राब्दी साम्राज्य सबसे आम गैर-यहूदी नाम है क्योंकि यह इस बात पर जोर देता है कि यह एक हजार साल तक चलेगा। जब अन्यजातियों का समय समाप्त होगा, तो मसीहाई साम्राज्य शुरू होगा। यह एक शाब्दिक, सांसारिक राज्य होगा जहां से यीशु शासन करेगा और यरूशलेम में डेविड के सिंहासन से शासन करेगा क्योंकि इस राज्य का आधार डेविड के साथ परमेश्वर की वाचा है (दूसरा शमूएल ७:५-१६; पहला इतिहास १७:१०-१६; मत्ती १:१ और लूका १:३२)। यह जॉन द बैपटिस्ट द्वारा घोषित राज्य था (मत्ती ३:२, ४:१७, १०:५-७), और यह वह राज्य था जिसे यीशु ने निकोडेमस के साथ अपनी मुठभेड़ से पेश किया था (देखें Bv – यीशु निकोडेमस को सिखाता है) . प्रभु ने तब तक मसीहाई साम्राज्य की

Er – उसी दिन उस ने उन से दृष्टान्तों में बातें कीं | 5

पेशकश जारी रखी जब तक उन पर राक्षसों के कब्जे का आरोप नहीं लगाया गया (देखें Eh
– यीशु को महासभा द्वारा आधिकारिक तौर पर अस्वीकार कर दिया गया है)।

परमेश्वर के राज्य का पाँचवाँ पहलू एक रहस्यमय राज्य था। मसीह के राज्य के प्रस्ताव को अस्वीकार किए जाने के बाद, मानवीय दृष्टिकोण से, इसे कुछ समय के लिए वापस ले लिया गया। यीशु को अपने राज्य की शुरुआत के लिए अपना खून बहाने की जरूरत थी। यह समझना महत्वपूर्ण है कि उसे मरना होगा, भले ही उसके राज्य के प्रस्ताव को राष्ट्र ने स्वीकार कर लिया हो क्योंकि यह केवल खून से ही आ सकता था। यदि यहूदियों ने उसे अपना राजा स्वीकार कर लिया होता, तो रोमन इसे राजद्रोह के रूप में देखते। उसे वैसे ही रोमनों द्वारा गिरफ्तार किया गया, मुकदमा चलाया गया और सूली पर चढ़ा दिया गया। अंतर यह है कि जब वह तीन दिन बाद उठे तो उन्होंने रोमन साम्राज्य को ख़त्म कर दिया होगा और मसीहा साम्राज्य की स्थापना की होगी। मुद्दा यह नहीं था कि वह मरने वाला था; मुद्दा यह था कि राज्य की स्थापना कब होगी।

महान क्लेश के दौरान यहूदी लोगों को मसीहाई राज्य पुनः प्रदान किया जाएगा (मत्ती २४:१४)। हालाँकि, उस समय इज़राइल यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार करेगा (प्रकाशित वाक्य पर मेरी टिप्पणी देखें ईवि – यीशु मसीह के दूसरे आगमन का आधार)। इस्राएल की स्वीकृति के परिणामस्वरूप, वह शासन करेगा (जकर्याह १४:१-१५) और अपना मसीहा साम्राज्य स्थापित करेगा (प्रकाशितवाक्य १९:११-२०:६)।

लेकिन चूँकि राज्य को अस्वीकार कर दिया गया है, मसीह की जनता से केवल दृष्टान्तों में बात करने की नई नीति (मत्ती १३:३४-३५) परमेश्वर के राज्य के एक नए पहलू का परिचय देती है जिसे रहस्यमय राज्य कहा जाता है। पॉल ने कहा कि उसे अन्यजातियों को मसीहा के अथाह धन की खुशखबरी देने और सभी को यह देखने देने का विशेषाधिकार दिया गया था कि यह गुप्त योजना कैसे काम करने वाली है। परमेश्वर ने इस रहस्य को युगों-युगों तक छिपाए रखा, परन्तु अब यह उन लोगों पर स्पष्ट हो गया है जिन्हें उसने अपने लिए अलग किया है (इफिसियों ३:८बी-९ए; कुलुस्सियों १:२५ सीजेबी)। आज अधिकांश लोग रहस्य को कुछ ऐसा समझते हैं जिसे समझाया या जाना नहीं जा सकता। लेकिन बाइबल में एक रहस्य कुछ ऐसा है जो पहले छिपा हुआ था, और अब प्रकट हो गया है। दृष्टांत परमेश्वर के राज्य के रहस्यमय रूप का वर्णन करते हैं।

रहस्यमय साम्राज्य महासभा द्वारा यीशु की अस्वीकृति के साथ शुरू होता है और दूसरे आगमन तक जारी रहता है। वह पिता के दाहिने हाथ से इस राज्य पर शासन करता है (रोमियों ८:३४; इब्रानियों १:१-३, १२:२)। रहस्यमय साम्राज्य पृथ्वी पर स्थितियों का वर्णन करता है जबकि राजा अनुपस्थित है और स्वर्ग में है। ये रहस्य बताते हैं कि परमेश्वर का राज्य कैसा है। यह विश्वासियों और अविश्वासियों, यहूदियों और अन्यजातियों दोनों से बना है। अर्थात्, यह हमें गेहूँ और जंगली घास दोनों की याद दिलाता है (देखें Ev – गेहूँ और जंगली घास का दृष्टान्त)।

Er – उसी दिन उस ने उन से दृष्टान्तों में बातें कीं | 6

रहस्य साम्राज्य को परमेश्वर के राज्य के अन्य पहलुओं से अलग रखा जाना चाहिए। पहला, रहस्य साम्राज्य शाश्वत साम्राज्य के समान नहीं है क्योंकि रहस्य साम्राज्य पहले और दूसरे आगमन के बीच के समय तक सीमित है। दूसरे, यह आध्यात्मिक साम्राज्य के समान नहीं है क्योंकि यह केवल विश्वासियों से बना है, जबकि रहस्य साम्राज्य में विश्वासियों और अविश्वासियों दोनों शामिल होंगे। तीसरा, यह ईश्वरीय साम्राज्य के समान नहीं है क्योंकि यह अब केवल एक राष्ट्र, इज़राइल राष्ट्र तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें यहूदी और अन्यजाति दोनों शामिल हैं। चौथा, यह मसीहा साम्राज्य के समान नहीं है क्योंकि मसीहा साम्राज्य कोई रहस्य नहीं था। तानाख मसीहा साम्राज्य का बहुत विस्तार से वर्णन करता है (यशायाह ६०:१-२२, ६६:१-२४; जकर्याह १४:१६-२१)। न ही रहस्य साम्राज्य चर्च है क्योंकि चर्च रहस्य साम्राज्य के दायरे में शामिल है, और रहस्य साम्राज्य चर्च से कहीं अधिक व्यापक है। इसमें प्रेरितों २ से लेकर रैप्चर तक चर्च युग शामिल है। इसमें महान क्लेश भी शामिल है। रहस्यमय साम्राज्य की समयावधि मत्ती १२ में राजा की अस्वीकृति के साथ शुरू होती है जब तक कि महान क्लेश के अंतिम दिनों में राजा की स्वीकृति नहीं हो जाती।

दृष्टांत एक नैतिक या आध्यात्मिक सत्य के साथ भाषण का एक अलंकार है जिसे रोजमर्रा की जिंदगी और अनुभव से उपमाओं से सिखाया या चित्रित किया जाता है। यह ज्ञात से अज्ञात की ओर जाने के सिद्धांत का उपयोग करता है। यह एक आँकड़े से वास्तविकता की ओर जाता है। दृष्टान्तों को इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए डिज़ाइन किया गया है, “अब जब राजा को अस्वीकार कर दिया गया है, तो ईश्वर का राज्य कैसा होगा जब तक कि दूसरे आगमन पर मसीहा का साम्राज्य स्थापित नहीं हो जाता?”

एक ऐसे रूपक की तुलना में जो वास्तविकता पर आधारित नहीं है (पुस्तक पिलग्रिम्स प्रोग्रेस देखें) और सभी विवरण महत्वपूर्ण हैं, एक दृष्टांत एक प्रमुख बिंदु बनाता है। इसलिए आपको किसी भी दृष्टान्त के विवरण पर जोर नहीं देना चाहिए। आपको पहले दृष्टांत का मुख्य बिंदु खोजना होगा। एक बार यह ज्ञात हो जाने पर, दृष्टांत का विवरण सही हो जाएगा। हकीकत समझने से पहले आपको आंकड़ा जानना जरूरी है. अज्ञात को समझने से पहले ज्ञात स्पष्ट होना चाहिए। आध्यात्मिक महत्व को समझने से पहले आपको शाब्दिक आंकड़े को समझने की आवश्यकता है। इसलिए मैं प्रत्येक दृष्टांत की शुरुआत में एक प्रमुख बिंदु बताऊंगा।

दृष्टांत चार अलग-अलग प्रकार के होते हैं। उदाहरण के लिए, एक ओर अच्छे सेमेरिटन (एक कहानी) और दूसरी ओर ब्रेड में खमीर (एक उपमा) के बीच एक बुनियादी अंतर है, और ये दोनों इस कहावत से भिन्न हैं: आप हैं पृथ्वी का नमक (एक रूपक), या मैं तुम्हें भेड़ की तरह भेड़ियों के बीच भेज रहा हूँ (एक उपमा)। फिर भी ये सब समय-समय पर चर्चाओं या दृष्टान्तों में पाया जा सकता है।

द गुड सेमेरिटन एक कहानी दृष्टांत का एक उदाहरण है। यह एक शुद्ध और सरल कहानी है,

Er – उसी दिन उस ने उन से दृष्टान्तों में बातें कीं | 7

जिसकी शुरुआत और अंत है। इसमें कुछ कथानक भी है। ऐसी अन्य कहानी दृष्टान्तों में खोई हुई भेड़, उड़ाऊ पुत्र, महान भोज, अंगूर के बाग में मजदूर, अमीर आदमी और लाजर और दस कुँवारियाँ शामिल हैं। वे एक विशिष्ट घटना से सत्य को स्थानांतरित करते हैं जो वास्तव में घटित हुई थी।

एक कहावत जैसे: तुम धरती के नमक हो, वास्तव में एक रूपक है। यह आलंकारिक या प्रतीकात्मक भाषा का उपयोग करता है जो दो भिन्न चीजों की तुलना करता है। जब येशुआ ने कहा: मैं द्वार हूं, तो आप समझ सकते हैं कि वह क्या कहना चाह रहा था, लेकिन वह स्पष्ट रूप से द्वार नहीं बना।

एक उपमा में “जैसा” या “पसंद” शब्द का उपयोग किया जाता है। यीशु ने कहा: मैं तुम्हें भेड़ों के समान भेड़ियों के बीच भेज रहा हूं (मत्ती १०:१६), या: जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस मूर्ख मनुष्य के समान है जिसने अपना घर रेत पर बनाया (मत्ती ७:२६).

जब एक उपमा को एक साधारण स्पष्ट तुलना से चित्र में विस्तारित किया जाता है, तो हमारे पास एक उपमा होती है। दूसरी ओर, रोटी में खमीर, एक उपमा से अधिक है। ख़मीर के बारे में जो कहा जाता है, स्टैंड पर लगाई गई रोशनी, या सरसों के बीज हमेशा ख़मीर के बारे में सच होते हैं, स्टैंड पर लगी रोशनी, या सरसों के बीज के बारे में। इस तरह के दृष्टांत रोज़मर्रा की ज़िंदगी से लिए गए दृष्टांतों की तरह हैं जिन्हें येशुआ ने एक बिंदु बनाने के लिए इस्तेमाल किया था। वे आम तौर पर लोग जो करते हैं उसके आधार पर सामान्य ज्ञान से स्थानांतरित होते हैं।

जैसा कि अर्नोल्ड फ्रुचटेनबाम ने ईसा मसीह के जीवन पर अपनी टेप श्रृंखला में चर्चा की है, अब हम नौ दृष्टांतों को देखेंगे जो सामूहिक रूप से विचार के बुनियादी प्रवाह को विकसित करते हैं।